विहास मंगला

वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पठ्य क्रम के तृतीय

सेमिस्टर बी. काम. पर आधारित अध्ययन सामग्री

COMPULSORY FOUNDATION LANGUAGE (CBCS)

HINDI : Group-III – III Semster-B.Com.

संपादक

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

हिन्दी विभागाध्यक्ष

पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु

अध्यक्ष

मंगलूरू विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरू

2021

विहास मंगला

संपादक मंडल

उपाध्यक्ष

प्रो.नागभूषण एच.बी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री भुवनेंद्र कॉलेज, कार्कल.

सचिव

डॉ. शालिनी एम.
एस.डी.एम व्यवहार अध्ययन
महाविद्यालय, मंगलूरु.

कोशाध्यक्ष

डॉ. परशुराम जी. मालगे
हिन्दी विभागाध्यक्ष
बेसेंट महिला कॉलेज, मंगलूरू.

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरु

दो बातें

साथियों मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास), मंगलूरु विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों के अध्यापक एवं छात्रों को ध्यान में रखते हुए, कुछ वर्षों से निरंतर कई साहित्यिक गतिविधियों का कार्यक्रम आयोजन करता आ रहा है। इनमें हमारे हिन्दी भाषा के छात्र और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए हिन्दी पाठ्य विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री तैयार करना भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम पर आधारित विशेष अध्ययन सामग्री का संकलन किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित द्वितीय सेमिस्टर (III Semister) के बी.ए.,बी.काम बी.एस-सी.,बी.बी.ए.तथा बी.सी.ए.,के पाठ्यक्रम के अनुसार मध्यकालीन और आधुनिक कविता, लंबी कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी एवं निबंधों का सार इस संकलन में प्रस्तुत है। हिन्दी भाषा के छात्र अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सरल, प्रवाहमय एवं शुद्ध हिन्दी का उपयोग करें, इस दिशा में उनका मार्गदर्शन हेतु विषय-विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन सामग्री तैयार हुई है। अलग-अलग कक्षाओं के प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अनुरूप अध्ययन सामग्री यहाँ उपलब्द है। इस संकलन के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं, इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ **(विहास)** की तरफ से इस प्रकार का मेरे संपादन में चतुर्थ प्रयास है। इस कार्य में साथी अध्यापक मित्रों का भरपूर योगदान है, अतः मैं उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है कि आप इसको सहर्ष स्वीकार करेंगे। इस संकलन में भूल-चूक होगी अतः आपसे निवेदन है कि कृपया इनका संशोधन करके अपने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने का कष्ठ करें।

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

संपादक

तृतीय अध्याय : वाणिज्य मंगला (बी.काम.)

1. ताजमहल का टेंडर- अजय शुक्ला - डॉ.कल्पना जे. प्रभु
2. मुखौटा – विमल कुमार - डॉ.नागरत्ना राव
3. गुरिल्ले का आत्मकथन- अनुज लुगुन- डॉ.सुमा टी. आर

1. ताजमहल का टेंडर

- अजय शुक्ला

नाटककार का परिचय :

अजय शुक्लाजी का जन्म जुलाई 7,1955 को हुआ था | आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए . किया | 1980 में आप भारतीय रेल यातायात सेवा में अधिकारी हुए | वर्ष 2015 में सेवानिवृत्त हुए तथा अब लखनऊ में रह रहे है | आपकी रचनाओं में से ताजमहल का टेंडर " मोहन राकेश सम्मान से सम्मानित है ", 'प्रश्नचिह्न' और 'प्रतिबोध' कविताएँ है| "दूसरा अध्यायन "ाटक साहित्य कला परिषद द्वारा पुरस्कृत है | इन्होने अंग्रेजी में भी रचना की है , इनकी ई किताबें भी प्रकाशित है |

कथावस्तु :

अजय शुक्ला जी से लिखित नाटक आज की भ्रष्ट " ताजमहल का टेंडर" समाज के , कार्यालय का पर्दाफ़ाश करनेवाला ऐतिहासिक परिस्थिति के साथ जुड़ा हुआ नाटक है | यह एक व्यंग्यात्मक और कटाक्षपूर्ण साहित्यिक कृति है | आगरा की पृष्टभूमि पर आधारित यह नाटक भारतीय सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य में निरंतर चली आ रही एक भारी समस्या भ्रष्टाचार - पर आधारितहै| इस नाटक में केवल मुगलसम्राट शाहजहाँ ही एक काल्पनिक पात्र है , अन्य सभी वास्तविक है | नाटक कार को अचानक एक विचार आया था कि आज की व्यवस्था में यदि ताजमहल बनाया जाय तो ? इसी विचार के अंतर्गत अनेक पात्र उतर आए और उन्होंने यह नाटक रचा | नाटक में मुग़ल काल के शाहशाह शाहजहाँ आज के समय में उपस्थित हैं

और अपनी दिवंगत बेगम मुमताज महल के लिए ताजमहल बनवाना चाहते है | अपने इस सपने को पूरा करवाने के लिए उन्हें आधुनिक समय के विभिन्न सरकारी दफ़्तरों का जो सामना करना पड़ता है यही इस नाटक की कहानी का सार है | इस नाटक की खास बात यही है कि एक ही मंच पर एक तरफ शाहशाह शाहजहाँ का दरबार लगा है तो दूसरी तरफ आगरा विकास प्राधिकरण के एक चीफ इंजीनियर गुप्ताजी का देसी दफ़्तर दिखाया गया है जो सम्पूर्ण नाटक का एक महत्वपूर्ण पात्र है | अन्य पात्र नौकरशाही और व्यवस्था के जाने पहचाने पात्र हैं | भईयाजी, शर्माजी, जैसे नाना प्रकार के नामों से हमारे सामने आते रहते है |

नाटक के आरम्भ में नर्तक मंडली ढोल मंजीरे धुन के साथ समवेत स्वर में ताजमहल के टेंडर का गीत गाते हुए दिखाए गए है | तुरंत बाद गुप्ताजी अपने असिस्टेंट सुधीर से शाहजहाँ के ताजमहल बनवाने के सपने के बारे में कहते हुए हाली में बनाये लाल किले का एक्सटेन्शन से कमाए पैसों के बारे में बातें करते हुए दिखाए गए है | शाहजहाँ ने ताजमहल का नक्शा तैयार करने के लिए गिनकर सात दिनों का समय देकर हुक्म दिया कि आठवे दिन काम शुरू हो जाए | परेशान गुप्ताजी से सुधीर उनका असिस्टेंट आकर जब इसके बारे में पूछता है तो गुपताजी पहले से ही बड़ा प्लान सोचकर बैठे हुए थे खुशीसे इस काम को आरम्भ करने की बात कह देते है | सुधीर ताजमहल का टेंडर सुनते ही खुश हो जाता है और कह उठता है कि अब तो किस्मत खुल गयी मगर गुप्ताजी उसे चुप करा देते है और कहते है कि गौरमेंट सर्वेंट्स खूब मौज करे तो बदनामी ही होती है |

गुप्ताजी सुधीर से सलाह लेते हुए भईयाजी को काम सौंपने की बात सोचते है उससे पूर्व शाह जहाँ से मिलने जाते है | वहाँ जो ताजमहल का पर्ट चार्ट बनाया हुआ है उसे देकर अनुमोदन लेना चाहते है | मगर शाहजहाँ उसे न समझते हुए गुप्ताजी से विस्तार से उसे समझाने को कह देते है तो गुप्ताजी यह बताते है कि ताजमहल बनाने के रास्ते में जो काँटों से भरी राह है उस पर सोच सोचकर कदम बढ़ाना होगा इसके लिए पहला कदम है ताजमहल कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन होगा | क्योंकि सरकारी पी डब्ल्यू डी . का तो हाल ऐसा है कि कोई काम सौंपा तो बस वर्क्स प्रोग्राम में सालों पड़ा रहेगा कभी नम्बर ही नहीं आएगा | इसलिए एक ऐसी संस्था होनी चाहिए जो सिर्फ ताजमहल बनाने का काम देखें | कहते कहते एस्टिमेशन और जस्टिफिकेशन जो बना लाया था दिखाता है | पांचों दरबारी जो मौजूद थे आनाकानी करने लगते है अंततः तय होता है कि दारा शिकोह शाहजहाँ के बेटे को ताजमहल कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन का चेयरमेन बना दिया जाय | तथा गुप्ताजी को सक्रेटरी बनाया जाए और इस प्रकार एक महीने बाद फिर रिव्यु मीटिंग करने की बात को लेकर दरबार ख़ारिज हो गया

गुप्ताजी इससे थोड़े विचलित हो जाते है | मगर पैसा किसे खुश नहीं करता आनेवाले अच्छे दिन का एहसास उन्हें आगे बढ़ाता है | भईयाजी जो कांट्रैक्टर है उनसे मिलने आता है | गुप्ताजी उन्हें ताजमहल कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन की ऑफिस बिल्डिंग का टेंडर देते है | महीने बाद जब गुप्ताजी शाहजहाँ से मिलने जाते है तो उस बिल्डिंग का नक्शा साथ लिए हुए होते है जिसे देखकर शाहजहाँ अचम्भित हो जाते है | गुप्ताजी के समझाने पर बिल्डिंग के लिए

पैसा सैंक्शन हो जाता है | दो साल बाद ताजमहल की साईट के लिए फंड्स रिलीज करने के लिए फिर गुप्ताजी दरबार पहुँच जाते है | दरबारियों की कानाफूसी के बावजूद शाहजहाँ ताजमहल के नक़्शे से खुश होकर लाखों पैसा देते है और मुह्मांगा इनाम देने के लिए तैयार हो जाते है |

भईयाजी ,गुप्ताजी , सुधीर मिलकर ताजमहल के नाम पर अपना उल्लू सीधा करते रहते है | कोई नया घर बनवाता है तो कोई अपने चचाजी की जमीन बिकवाता है | गुप्ताजी दो साल बाद रिटायर होनेवालके थे तो शाहजहां उसे एक्सटेंशन भी करवाते है | इसी दौरान धुरूलाल नाम का एक नेता गुप्ताजी से जमना किनारे में ताजमहल बनाने को रोकने के लिए अपने जमना बचाओ आंदोलन के अध्यक्ष के नाते मिलने आता है | सुधीर उसे पैसा देकर भेज देता है | उसके जाने के बाद आता है दूसरा नेता जो जन हितैषी बना हुआ है मगर अपनी जमीन पर ताजमहल बनने जा रहा है वहां बसे हुए लोगों को विस्थापित करवाने आया हुआ है | मगर उसके आड़ में अपनी भीगी जमीन बेचना चाहता है | बहस में लगे नेता को सुधीर समझा ने लगता है तो वह अपनी जमीन भईयाजी के चचाजी की जमीन के रेट पर बिकवाने से ही आंदोलन न करने की बात लेकर बैठ जाता है | इस पर गुप्ताजी से सुधीर कहता है कि अडिशनल लैंड एक्वायर करने का प्रपोजल बनाकर उनकी जमीन लेने की सलाह देता है और इस तरह समस्या सुलझ जाती है |

गुप्ताजी फिर एक बार विस्थापितों का पुनर्वास के लिए ऐल आई जी कॉलोनी का . प्रपोजल लेकर शाहजहां से मिलते है | इससे शाहजहां चिंतित होकर कहते है कि पांच साल पूरे हो गए पर ताजमहल बनना तो अभी शुरू भी नहीं हुआ है | गुप्ताजी अपने कंधे का बोझ उतारने के लिए औरंगजेब पर आरोप लगाते है कि शाहशाह के बेटे नहीं चाहते है कि ऐसा कुछ बनवाया जाय इसलिए एडवर्स पब्लिसिटी करवा रहे है |

आठ साल हो गए वक्त बहुत जल्दी निकल गया मगर ताजमहल का आरम्भ भी न हुआ | इतने में गुप्ताजी का रिटायरमेंट दिन नजदीक आने लगा तो सुधीर की नसीहत के मुताबिक एक्सटेंशन के लिए शाहजहां के पास जाने की तैयारियां करने लगे तो उसी समय विजिलेंस इंस्पेक्टर सेठी साहब उनके दफ्तर आ पहुँचे | रेत में मिलावट, भईयाजी पर आरोप लेकर आये सेठीजी को उनके पैसे हिसाब के मुताबिक पूरे पहुँचाने का जिम्मा लेकर भेज दिया गया | |

कुछ ही दिनों में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड यानी पोल्युशन कंट्रोल बोर्ड से शर्माजी पहुँच जाते है | उनका कहना था कि जब तक पोल्युशन बोर्ड सर्टिफाई न करें किसी भी बिल्डिंग का नक्शा पास नहीं हो सकता है | वह जानना चाहते है कि ताजमहल से कितना पोलुशन होगा और उसका क्या डिस्पोजल होगा | क्योंकि वह रेजिडेंशियल एरिया में बन रहा है | उन्होंने नक़्शे में चार चिमनियां देखी है उससे कितना धुंआ निकलेगा और लोग कैसे रह पाएंगे | गुप्ताजी सुनकर भ्रमित हो जाते है और कहते है कि वह चिमनी नहीं मीनारे है जिससे कोई धुआं नहीं निकलेगा | वह केवल एक मकबरा है कोई पावर हॉउस नहीं | लम्बी बहस के बाद

गुप्ताजी हार मानकर सुधीर को भईयाजी से उस पोल्युशन नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी को कुछ देकर रफा दफा करने को भेजते है |

शाहजहां स्वयं गुप्ताजी से मिलने आते है तो गुपताजी अपने रिटायर होने की बात छेड़ते है ; दस साल पूरे हो गए ताजमहल अभी आरम्भ नहीं हुआ और चीफ इंजीनियर साहब रिटायर हो रहे है सुनकर शाहजहां बेवाक हो जाते है | तुरंत गुप्ताजी को एक्सटेंशन देकर जल्द से जल्द ताजमहल बनवाने का हुक्म देते है | भईयाजी और गुप्ताजी ताजमहल का रिवाइज़ड एस्टीमेट पास करने के विचार में डूबे हुए थे तो सुधीर आकर अकाउंट्स विभाग के अधिकारी चोपड़ा साहब की ऑब्जेक्शन के बारे में कह देता है | कोई सवा लाख ऑब्जेक्शन जो मिले है उसे ठीक किये बगैर कुछ नहीं हो सकता यदि कुछ करवाना चाहते है तो चोपड़ा साहब को पांच पर्सेंट और उनके पी। ए। को आधा पर्सेंट देने पर सारे ओब्जेक्शन्स निकलकर उनका एस्टीमेट पास हो जाएगा | गुप्ताजी इतने माहिर थे कि चोपड़ा साहब से लम्बी बहस करने के बाद उनकी बात मानकर उनके हिस्से के पैसे देने का आश्वासन के साथ अपना केस क्लियर करा देते है | सुधीर से सवा लाख ऑब्जेक्शन को जलाने को कहते हुए गुपताजी अपने काम में जुट जाते है |

जब शाहजहाँ से मिलने गए गुप्ताजी तो वे पंद्रह साल गुजरने के बाद भी ताजमहल का काम न होने का दुःख जताते है | गुप्ताजी बताते है कि जिस जमीन पर ताजमहल बनाना था वहाँ रहनेवाले झुग्गीवालों ने अपने ट्रांसफर पर कोर्ट केस कर दिये और कोर्ट ने स्टे दे दिया वे लोग टेनेन्सी राइट क्लेम कर रहे है क्योंकि वे दस सालों से वहाँ रह रहे है अब उन्ही का अधिकार है उस जमीन पर शाहजहाँ बेहद अफ़सोस के साथ कहते है कि पिछले पंद्रह सालों से

वे सब्र करते आये है | एक तरफ इन्फ्लेशन इतना बढ़ रहा है और दूसरी तरफ पैसा बहकर जा रहा है | दरबारियों से यह पता चला है कि बेटे औरंगजेब इस प्रोजेक्ट को लेकर काफी हंगामा कर रहे है | दारा शिकोह चुप है बेटी जहानआरा इसे एक रोजगार योजना कहकर प्रशंसा दे रही है | दरबारियों से शाहजहां को पता चलता है कि ताजमहल को लेकर बहुत खर्चा हो चुका है आगे फंड्स के लिए कुछ करना होगा, डेफिसिट फाइनैंसिंग करके काम तो किसी तरह से चल रहा है पर ऐसा बहुत समय चल नहीं सकता है | गुपताजी इसके लिए ताजमहल कॉर्पोरेशन को एक पब्लिक कंपनी बनाकर इसके शेयर्स इशू करने की सलाह देते है | दरबारी इस सलाह से खुश होते है और पांच सौ रूपए का प्रीमियम भी रखा तो ओवर सब्स्क्राइब होने की गुंजाइश दिखते है | और अगर कुछ फौरन कोलब्रेशन दिखाने पर शेयर्स ब्लू चिप्स हो जाने की उम्मीद जताते है | गुप्ताजी यह भी बताते है कि ताजमहल का डिजाइन बनाने के लिए उन्होंने जापानी पेन और जर्मन कागज का इस्तेमाल करा था इसलिए अब ताजमहल कोरपोरशन फॉरेन कोलेबरेशन ही हुआ | गुप्ताजी जब यह कहते है कि ताजमहल को एक टूरिस्ट स्पॉट बनाया तो फॉरेन एक्सचेंज करोड़ों में आने की उम्मीद है तब शाहजहां कहते है कि सब मिलकर उनकी बेगम के मकबरे को एक पिकनिक स्पॉट बनाना चाहते है तो वह मुमकिन नहीं है | शाहजहाँ अचानक बेहोश होकर गिर पड़ते है | उनकी बेटी जहाँन आरा आकर उन्हें आरामगाह ले जाती है | सभी मिलजुलकर गुप्ताजी से पब्लिक इशू निकलने के लिए विचार विमर्श करने लगते है | गुप्ताजी के कहने के मुताबिक उनके एक मित्र हँसमुख भाई को शेयर्स इशू करवाने का काम

सौंपा गया | दरबारी अपने लिए प्रिफ़रेंशियल अलॉटमेंट करवाने के लिए कहकर प्रस्थान करते है | गुप्ताजी जब अपने दफ़्तर गए तो वहाँ सुधीर उनका असिस्टेंट कहने लगता है कि कॉर्पोरेशन को प्राइवेट सेक्टर बनाने की बात को लेकर लोग भड़के हुए है , मारपीट करने लगे है तो चेयरमैन दारा शिकोह खिड़की से कूदकर भाग गए | यूनियन वालों ने एम्.डी. को पकड़कर खूब पिटाई की , फिर जब उसने सबको शेयर्स के फॉर्म भरने दिए तो सब शांत हो गए | नाटककार यहाँ यह दिखाना चाहते है कि आधुनिक सरकारी दफ्तरों की यही हाल है , किसीको काम से कोई मतलब नहीं ,सभी अपने पैसों के पीछे भागते रहते है|

भईयाजी जब गुप्ताजी से मिलने आये तो कहते है कि ताजमहल बना या न बना गुप्ताजी का दो घर बन गया | इस पर गुप्ताजी अभी भी एक फाइव स्टार होटल बनाने का विचार पेश करते है | रिटायर होने के बाद खाने का कुछ जरिया तो होना चाहिए न , अब बादशाह की खिदमत करके थक चुके है करप्शन के बीच जूझने खुद भजन पूजन कर समय निकालना चाहते है | भईयाजी के कहने पर गुप्ताजी शाहजहाँ से मिलने जाते है | शाहजहाँ गुपताजी को देखकर कहते है कि वे केवल ताजमहल के लिए जी रहे है | जबतक ताजमहल नहीं बनता वे तो मर भी नहीं सकते है | बीस साल हो गए गुप्ताजी का स्टाफ दिन रात काम कर रहा है पर ताजमहल तो बना ही नहीं | गुप्ताजी कहते है कि उनके लोग फिलहाल शेयर्स के काम पर लगे हुए है | संगमरमर नहीं आ पा रहा है कुछ लोगों ने संगमरमर बचाओ आंदोलन छेड दिया है इसलिए विलम्ब हो रहा है | सभी कहते है कि जहाँ से संगमरमर लाना था इस

मारखंड नमक स्थान एक ढेला भी उठाने नहीं दे रहे है | उन्हें तो औरंगजेब की साजिश लगती है | अंततः तय होता है कि संगमरमर की सप्लाई का भी एक छोटा सा कॉन्ट्रैक्ट दे दिया जाय | जहाँन आरा से कहकर प्रपोज़ल क्लियर करवाने की भी बात होती है जो उन दिनों सारा कामकाज की देखरेख कर रही थी |

भईयाजी संगमरमर का बड़ा ठेका दिलवाने पर गुप्ताजी से खुश है, कहते हैं कि ताजमहल खड़ा हो या न हो उसके चक्कर में गुप्ताजी की कई बिल्डिंग खड़ी हो गयी | बात ख़तम भी नहीं हुई कि सुधीर भागता हुआ आया और कहने लगा कि हंसमुख भाई के घर पर रैड पड गयी काफी कैश निकला साथ में सारे कागजात जब्त हो गए | पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार भी कर लिया | इस पर गुप्ताजी कहते है कि ज़माने में ईमानदार आदमी का तो जीना ही मुश्किल है|

गुप्ताजी को उसी समय दरबार में तुरंत बुलाया जाता है | दो अखबारवाले ' ताजमहल घोटाले का पर्दाफाश द मुग़ल एक्सप्रेस ने बादशाह का भांडा फोड़ा , औरंगजेब का वक्तव्य शाहजहां को नैतिक आधार पर त्याग पत्र देने की मांग ' कहते हुए मंच से गुजरते है | शाहजहां गुप्ताजी से कहते है कि उन्होंने किस बवाल में ला पटका, बेगम मुमताज के मकबरे की बुनियाद भी नहीं पडी पर उनकी खुद की कब्र खोदी जा रही है , तो गुप्ताजी इत्मीनान से शाहजहां को यह कहते हुए शांत करा देते है कि वे भी स्वयं उस स्कैंडल से परेशान है | करीब पचास दरबारियों का एक जांच आयोग बनायेँगे जिसमे औरंगजेब की तरफदारी करनेवाले मनसबदार

भी होंगे | जांच आयोग जब तक रिपोर्ट लिख पायेगा उतने में ताजमहल बन जाएगा , फिर कोई मसला नहीं रहेगा | सुधीर गुपताजी के दरबार से लौटते ही पूछ लेता है कि परेशानी कहाँ तक ख़तम हुई तो गुप्ताजी गंभीरता से कह देते है कि और एक अपना फार्म हॉउस बनवाने का ख्वाब जो पूरा होने जा रहा है उसे जाहिर करते है | सुधीर अपना भी पचास एकड़ मंजिली झोंपड़ी बनाने की बात कह देता है तो दोनों अपनी भ्रष्टता से संतुष्ट होते है |

गुप्ताजी खुश होकर सुधीर को बताते है कि उनका ताजमहल का टेंडर खुलवाने का सपना पच्चीस साल बाद पूरा हो गया तो भईयाजी और सुधीर भी उनकी खुशी में शामिल हो जाते है | उनके लिए गुप्ताजी फरिश्ते से कम नहीं लगते है | तीनों मिलकर ताजमहल का टेंडर का नोटिस शाहजहां को दिखाने उनके दरबार जाते है मगर वहां शाहजहाँ निढाल पड़े हुए नजर आते है | पास जाकर नोटिस दिखाने की कोशिश करते समय पाते है कि शाह जहां चल बसे है | भईयाजी टेंडर के फाइल को लेकर चिंता व्यक्त करते है तो गुप्ताजी उसे वैसे ही रखा रहने की सलाह देते है ताकि यदि कोई और ऐसा ताजमहल बनाने का ख्वाब लेकर आए तो यह टेंडर काम आएगा | नाटक के अंत में समवेत स्वर में नर्तक मंडली कह उठती है कि लोगों ने ताजमहल का हाल देख लिया होगा जिसे बनने में पूरे पच्चीस साल लग गए |

निष्कर्ष :

इस प्रकार आधुनिक अफसरशाही पर व्यग्य कसते हुए नाटककार अजय शुक्लाजी पूरे भारत में फैले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते है और आज की पीढ़ी को इसका परिचय देकर इससे ऊपर

उठने,इसके खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करते है | यह नाटक न ऐतिहासिक है सामाजिक कारन से बना है | इसकी प्रासंगिकता हमारे देश की भ्रष्ट व्यवस्थातंत्र पर चोट करनेवाली है | समीक्षकों ने इस नाटक को हास्य व्यंग्य की श्रेणी में रखा है |

सन्दर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न-:

1. जमाना ही ऐसा है सर| आजकल तप ईमानदार खुलकर हंस भी नहीं सकता |

   पृष्ठ सं -15

2. हाँ | खैर सो तो है ----------काम भी शुरू हो हो जाए | -पृष्ठ सं --16
3. ठीक है | अब अगले महीने -------- काम कितने आगे बढ़ा | -पृष्ठ सं -- 21
4. वाह वाह , क्या चीज है , ---------- दो बरसों से देख रहा था | - पृष्ठ सं -30
5. अरे आप कहाँ रिटायर होंगे | आपको तो एक्सटेंशन मिलेगा | -पृष्ठ सं - 33
6. कमाल का दिन है आज ---------- अरे जनाब। - पृष्ठ सं -39
7. क्या लगे हुए हैं ---------- शुरू भी नहीं हुआ है। -पृष्ठ सं -44
8. नहीं नहीं सेठी साहब ---------- कोई चीज होती है | -पृष्ठ सं -- 48
9. अरे सुनिए जनाब --------- पावर हाउस नहीं | -पृष्ट सं 51
10. जल्दी करो जल्दी करो तैयार हो जाएगा -------| -पृष्ठ सं 54
11. अरे साहब जमना जी में इतनी रेत है कि। - पृष्ठ सं 56
12. और ताजमहल तैयार------पड़ा है | -पृष्ठ सं 60

13. गुप्ताजी ,------- कर रहा हूँ | -पृष्ठ सं 61

14. खामोश चाह ----- ! रहे हो | -पृष्ठ सं 63

15. इस बार सुना है -------मरना जाए | -पृष्ठ सं 66

16. अरे मुझे तो ---- क्या देरी है ? -पृष्ठ सं 76

निबंधात्मक प्रश्न -:

1. "ताजमहल का टेंडरनाटक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए " ?
2. "ताजमहल का टेंडर नाटक का संक्षिप्त सार लिखिए "?
3. "ताजमहल का टेंडरनाटक के आधार पर शाहशाह शाहजहाँ " चरित्र चित्रण कीजिये ?
4. "ताजमहल का टेंडरनाटक " पर गुप्ताजी का चरित्र चित्रण कीजिये ?
5. "ताजमहल का टेंडरनाटक के " आधार पर आधुनिक भ्रष्ट व्यवस्था पर अपना मत स्पष्ट कीजिये ?

-प्रस्तुति

डॉ . कल्पना प्रभु जे.

हिंदी विभागाध्यक्ष, केनरा, कॉलेज मंगलुरु

****

2. मुखौटा

– विमल कुमार

हिंदी कविता और पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना नाम बनाने वाले श्री विमल कुमारजी के लिए कविता करना करुणा और विद्रोह का सशक्त माध्यम है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को बयान करने का सफल प्रयास किया। आज भारतीय समाज इतनी त्रासदियों से गुजर रहा है कि किसी भी समस्या को पूर्ण रूप से चित्रण करना असंभव है। फिर भी विमलजी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से आज के व्यक्ति के दोहरे व्यक्तित्व और दोगलेपन के यथार्थ को बखूबी चित्रित करने का प्रयास किया है। मुखौटा कविता इनके काव्य संग्रह यह मुखौटा किसका है का अंश है जिसमे मुखौटा की विशेषताओं का विश्लेषण है। ,जैसा कि इसके शीर्षक से ही यह ज्ञात होता है कि कवि आज के व्यक्ति के मुखौटों से परेशान हैं जिसके कारण व्यक्ति की असलियत को पहचानना मुश्किल हो गया है। आज हर व्यक्ति ने अपने चेहरे पर एक मुखौटा पहना है जो उसके स्वभाव के विपरीत है। यही सच्चाई है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इतनी विषमताएं हैं कि वह उनसे बाहर निकलने के लिए एड़ी - चोटी का ज़ोर लगाने के लिए भी तैयार है फिर चाहे उसे किसी के साथ धोखा ही क्यों न करना पड़े ? सबके चेहरे पर एक मुखौटा है जो उस व्यक्ति के असली रूप को छिपाता है। कवि इस कविता में इंसानों और उसके मुखौटो के विविध पहलुओं का सहज चित्रण करते हैं। वर्तमान समाज में व्यक्ति जो दिखाई देता है वह सच नहीं है। सच मुखौटे के भीतर छिपा हुआ है। कवि भीतर छिपे उसी सच्चाई से सुधी पाठकों को अवगत करना चाहते हैं। जैसे भालू ने शेर का मुखौटा पहना है तो बन्दर ने भालू का। अब कवि का प्रश्न यह है कि जब भालू , भालू नहीं और बन्दर , बन्दर नहीं तो मानव का मुखौटा पहने यह कौन है ? कवि हमें आगाह करते हैं कि किसी भी व्यक्ति पर भरोसा करने से

पहले सच्चाई को जान लें। ऊपर दिखने वाले मुखौटे से कहीं वह धोखा न खाये ?मानव जीवन की विडम्बना यह है कि सब जानते हुए भी लोग मुखौटे पर विश्वास कर लेते हैं और जो बिना कोई मुखौटा पहने सच कहता है उस को बहिष्कृत कर दिया जाता है।कवि को लोगों की यह फितरत समझ नहीं आती। इस प्रकार लोग सब जानते हुए भी धोखे का शिकार हो रहे हैं। किसी भी वस्तु की मांग के अनुसार आज बाज़ार के नियम तय होते हैं। जब हर व्यक्ति को अपनी असलियत छिपाने के लिए किसी न किसी एक मुखौटे की आवश्यकता पड़ी तो बाजार में कई तरह के मुखौटे मिलने लगे जैसे रंग -बिरंगे ,छोटे -बड़े आदि। अब तो मुखौटों की अधिक मांग के कारण उनका ही एक बाजार बन गया है। लोग भी भिन्न - भिन्न प्रकार के मुखौटों से आकर्षित होते हैं इसीलिए मेलों ,मॉल आदि के प्रवेश द्वार पर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए मुखौटा डाले व्यक्तियों को खड़ा किया जाता है। आज व्यक्ति का उद्देश्य अपना काम निकालने के लिए दूसरों को धोखा देना ही है भले ही इससे उस व्यक्ति के मन को बाद में चाहे कितना भी दुःख क्यों न हो ? मानव अपने लिए जिस किसी भी वस्तु का प्रयोग करता है आज उस सबकी एक कीमत है। जिस वस्तु का जितना ज्यादा दाम वह उतना ही अधिक कीमती होता है। जो जितना महंगा उसमें उतना ही बड़ा झूठ छिपा होता है। इसलिए अब कवि यहाँ पर व्यंग्य करते हैं कि जिस किसी को बाजार में अपने पैर ज़माने है उसे वैसा ही मुखौटा पहनना होगा। यही आज के झूठे जीवन का सच्चा नियम है। मुखौटा पहन कर नाटक अवश्य किया जा सकता है पर मुखौटे के बिना जीवन जीना मुश्किल है। हर किसी को अपना काम निकलने के लिए कोई न कोई मुखौटा पहनना ही होगा। कवि यहाँ पर आधुनिक जीवन के यथार्थ को बड़े ही सरल शब्दों में अभिव्यक्ति देते हैं। अब कवि इन आश्चर्यजनक मुखौटों की विशेषताओं का वर्णन करते हैं। इनकी विशेषता यह है कि इनमें जादुई शक्ति है जो दूसरों को बड़ी आसानी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जब व्यक्ति इस मुखोटे को देखकर उसके पास जाता है तो वह धीरे - धीरे अपने राज़

खोलता जाता है। तब व्यक्ति को उसकी असलियत का पता चलता है। यह तो हुआ मुखौटों का करिश्मा अब कवि इन मुखौटों को धारण करनेवाले लोगों की विशेषता बताते हैं। इंन्सान का यह सारा खेल मुखौटों पर ही निर्भर है। यदि किसी कारण मुखौटा एक - दूसरे से बदल गया तो उसका सारा नाटक ही बदल जाता है। पात्रों की भूमिका बदल जाने से उनका अर्थ भी बदल जाता है। मुखौटा पहनने से व्यक्ति का असली विकृत रूप उसके पीछे छिप जाता है। लेकिन सच्चाई यह है की चेहरा बदल जाने से उसका दिमाग तो नहीं बदल सकता। मुखौटा पहनकर बाहरी रूप से किसी को मुर्ख बनाया जा सकता है लेकिन उसकी बुद्धि नहीं बदली जा सकती। आज व्यक्ति के जीवन में इतना तनाव है कि वह अपने स्वभाव के विरूद्ध व्यवहार करने लगा है जिससे किसी को सही मायने में जानने का दावा ही नहीं किया जा सकता। इस कारण आज हर व्यक्ति बदला - बदला -सा नज़र आता है। कवि कहते हैं कि हम मुखौटा पहनकर भले ही दूसरों को धोखा दे सकते है पर अपने आप को नहीं। व्यक्ति सबसे भाग सकता है पर अपने आप से भाग कर आखिर वह जायेगा कहाँ ?इसके आलावा सबसे बड़ी बात यह है कि हम मुखौटा पहनकर अपना चेहरा छुपाकर दूसरों को धोखा दे सकते हैं पर अपनी बुद्धि को छिपाने के लिए दिमाग पर कैसा मुखौटा डालेंगे ?हमे समझना होगा कि चेहरा बचाये रखने से ज्यादा अपने दिमाग को बचाना ज़रूरी है। जब हमारे मुखौटे का नाटक समाप्त हो जायेगा , हमारे चेहरे से मुखौटा उतर जायेगा तो उस दिन सच्चाई को सबके सामने आने से कौन रोक सकता है ? इसलिए बेहतर है कि हम अपनी असलियत के साथ लोगों के सामने आएं इससे किसी को कोई तकलीफ न होगी। कवि पाठकों का ध्यान इसी बात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

आज की परिस्थिति में व्यक्ति को मुखौटा पहनने की इतनी आदत हो गयी है कि उसके बिना वह रह नहीं सकता। इसका दूसरा पक्ष यह है कि वह मुखौटा पहन कर अपने असली चेहरे को ही भूल गया है। अपना काम पूरा करने के लिए वह सारा दिन मुखौटा पहने रहता है और

दिन के अंत में थक कर उसी मुखौटे में सो जाता है। यहाँ कवि ने मानव को थका हुआ इसलिए कहा है क्यूंकि अपने मूल रूप में काम करने से उतनी थकावट नहीं होती जितना नाटक करने से होती है। नाटक करते समय उसे अपनी असलियत को छिपाना होता है तथा कृत्रिमता को अपनाना होता है। तभी दिन भर काम करके वह थक जाता है। इस मुखौटे ने कई परिवर्तन किये हैं जैसे कभी कोई गरीब , राजा हो जाता है तो कभी राजा , गरीब। इसका और एक पक्ष यह है कि यदि कोई गरीब है तो उसे किसी मुखौटे की आवश्यकता नहीं पड़ती क्यूंकि गरीबी ही उसकी सबसे बड़ी सच्चाई है। कई बार गरीब अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए चंद रुपयों के लिए क़त्ल करता है ,इसके लिए कई अपराध भी हुए हैं। अपराध होने के बाद वे मुखौटे अँधेरे में कहीं गुम भी हो गए हैं अर्थात इन मुखौटों ने धोखा दिया है और साथ ही अपराध भी किये हैं। जिन मुखौटों को पहनकर व्यक्ति दिन भर लोगों को डराता है , रात को कभी - कभी वह उसी मुखौटे को देखकर स्वयं डर जाता है। वैसे हर मुखौटे को एक चेहरे की तलाश होती है तो हर चेहरा भी एक नया मुखौटा तलाशता रहता है। कवि कहते हैं कि मुखौटा लाख सच बोलने का प्रयत्न करे पर वह कभी सच नहीं कह सकता क्यूंकि मुखौटे का तात्पर्य ही है असत्य या झूठ। जिस मुखौटे को पहनकर मनुष्य दूसरों को धोखा देता है वह उसी के द्वारा निर्मित है। दुनिया भर में कई प्रकार के रंग - बिरंगे ,हर आकर के मुखौटे मिलते हैं। मुखौटों का ही एक बाज़ार भी है। मानव निर्मित मुखौटे की भी उम्र होती है। वे भी बूढ़े हो जाते हैं। कुछ लोग अपने लिए अपनी मनपसंद मुखौटा खरीदते है तो कुछ लोगों को उपहार स्वरुप भी मिलता है। जो भी हो चाहे या अनचाहे मानव मुखौटों का प्रयोग करता है। अपने को धोखा देता है और दूसरों को भी धोखे में रखता है। अंत में कवि कहते हैं कि मुखौटा भी नाटक करते -करते एक दिन थक ही जाता है। फिर उसे अपने ऊपर ही दया आती है कि उसने अपना सारा जीवन नाटक करते - करते ही बिता दिया। अब वह थक गया है और पछताता है कि ज़िन्दगी भर उसने केवल लोगों को धोखा देने का ही

काम किया है। अब मुखौटा पहनकर इंन्सान किसी को भी धोखा दे सकता है पर अपने आप को नहीं। मुखौटे की सबसे बड़ी सच्चाई है कि इसे पहनकर जीवन में कुछ भी किया जा सकता है पर प्रेम नहीं किया जा सकता। प्रेम में तो सच्चाई की ज़रुरत है जो मुखौटे में नहीं है। इस प्रकार इस कविता के माध्यम से कवि सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए व्यक्ति को मुखौटा पहने लोगों से जागरूक बने रहने का सन्देश देते हैं।

एक वाक्य के प्रश्न :

१)भालू ने किसका मुखौटा पहना है ?

उ) भालू ने शेर का मुखौटा पहना है।

२) शहर में किस प्रकार के व्यक्ति का बहिष्कार किया जाता है ?

उ)जो मुखौटा नहीं पहनता उस व्यक्ति का शहर में बहिष्कार किया जाता है।

३)बाज़ार का नियम क्या है ?

उ)बाज़ार में सबको मुखौटा पहनना है ,यही उसका नियम है।

४) जो मुखौटा नहीं पहनता उसे किस्से लड़ना पड़ता है ?

उ) जो मुखौटा नहीं पहनता उसे बाज़ार से लड़ना पड़ता है।

५) मनुष्य द्वारा बनाये गए इस मुखौटे की विशेषता क्या है ?

उ) मनुष्य द्वारा बनाया गया यह मुखौटा जादुई है।

६)मुखौटा पहने लोगों की दुनिया कैसी है ?

उ) मुखौटा पहने लोगों की दुनिया एक नाटक है।

७) मुखौटा पहनने से क्या होता है ?

उ) मुखौटा पहनने से व्यक्ति का असली चेहरा छिप जाता है।

८) मखौटा पहनकर भले ही हम नाटक कर लें पर क्या हम जीवन जी सकते हैं ?

उ) नहीं ,मुखौटा पहनकर हम भले ही नाटक कर लें पर जीवन नहीं जिया जा सकता।

९) मुखौटा पहनकर कौन राजा बन सकता है ?

उ)मुखौटा पहनकर गरीब राजा बन सकता है।

१०) किस प्रकार के व्यक्ति का कोई मुखौटा नहीं होता ?

उ) गरीब आदमी का कोई मुखौटा नहीं होता।

११)मुखौटा पहनने वाला व्यक्ति रात में किस से डरता है ?

उ) मुखौटा पहनने वाला व्यक्ति रात में अपना ही मुखौटा देखकर डर जाता है।

१२) बाज़ार मैं मुखौटे किसे खोजते हैं ?

उ) बाज़ार में मुखौटे अपने खरीदारों को खोजते हैं।

१३) मुखौटा कभी क्या नहीं बोलता ?

उ) मुखौटा कभी सच नहीं बोलता।

१४) मुखौटे की भाषा में क्या छिपा होता है ?

उ) मुखौटे की भाषा में झूठ छिपा होता है।

१५) मुखौटा कौन बनाता है ?

उ) मनुष्य ही मुखौटा बनाता है।

१६) किस बाज़ार में मुखौटे निर्वाचित होते हैं ?

उ) लोकतंत्र के बाज़ार में मुखौटे निर्वाचित होते हैं।

१७) बुढ़ापे के साथ मुखौटे की क्या दशा होती है ?

उ) बुढ़ापे के साथ मुखौटा दयनीय हो जाता है।

१८) मुखौटा पहनकर व्यक्ति क्या नहीं कर सकता ?

उ) मुखौटा पहनकर व्यक्ति किसी से प्रेम नहीं कर सकता।

निबंधात्मक प्रश्न -

१) मुखौटा;कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहते हैं ? स्पष्ट कीजिये।

२) मुखौटा कविता के मुख्य भाव का विश्लेषण कीजिये।

३) कवि के अनुसार मुखौटाकी विशेषताओं को समझाइये।

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न :

अ) इस शहर में ,

हर किसी को पहनना पड़ता है ,

कोई न कोई मुखौटा।

जो नहीं पहनता ,मुखौटा

वह शहर से बहिष्कृत रहता है।

आ) तरह - तरह के मुखौटे

और मुखौटे पहनना ,

बाजार का ही नियम है।

इसीलिए जो नहीं पहनता ,

वह बाज़ार से लड़ता है।

इ) किसी ने पहन लिया ,

किसी का मुखौटा

उफ़ ! यह पूरा ही नाटक खराब हो गया ,

इस घटना से पात्र बदल गए ,

ई) नाटक में एक गरीब भी बन जाता है राजा ,

पहन कर उसका मुखौटा ,

राजा कभी गरीब नहीं बनता

क्योंकि गरीब आदमी का नहीं होता कोई मुखौटा।

उ) पर अन्ततः सभी समझ जाते हैं ,

मुखौटा सच नहीं कह सकता

क्योंकि उसकी भाषा में ही छिपा हुआ है झूठ।

ऊ) मुखौटा पहनकर

सब कुछ किया जा सकता है ,

पर नहीं किया जा सकता

किसी से प्रेम।

-प्रस्तुति

-डॉ नागरत्ना एन.राव

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरु

****

3. गुरिल्ले का आत्मकथन

- अनुज लुगुन

अनुज लुगुन - जीवन-परिचय

अनुज लुगुन आदिवासी कविता के क्षेत्र में एक नया उभरता हुआ नाम है। इनका जन्म झारखण्ड के सिमडेगा जिले के जलडेगा पहान टोली में 10 जनवरी 1986 को हुआ। सन् 2007 में राँची विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वे बी एच यू बनारस, हिन्दू विश्वविद्यालय चले गए। जहाँ उन्होंने एम.ए. किया और वही से "मुडारी आदिवासी गीतों में आदिम आकांक्षाएँ और जीवनराग" विषय पर शोध कर रहे हैं। अनुज की कविता में उनके आत्म में आदिवासी जीवन दर्शन है।

इनकी रचनाएँ आदिवासी जीवन पर आधारित है जो कि आदिवासी विमर्श के लिए उल्लेखनीय विषय है। वर्तमान में ये दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी शिक्षक है। उन्होंने लघु कथाएँ, उपन्यास, निबन्ध और कविताएँ लिखी। लेकिन उनकी पहचान कविता से बनी। उन्होंने कविताओं में प्रेम, स्वतंत्रता, आदिवासी जीवन और क्रांति को अपना विषय बनाया है। उनका प्रमुख काव्य 'उलगुलान की औरतें', 'अघोषित उलगुलान' तथा 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' आदि। अनुज लुगुन को सन् 2009 में मुक्तिबोध राष्ट्रीए काव्य सम्मान और भारतभूषण अग्रवाल सम्मान 2011 को मिला। इतनी ही नहीं 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' काव्य को साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2019 में नवाज़ा गया

कविता का सारांश

अनुज लुगुन बहुत ही शालीन, शान्त और विनम मुद्रा में लेकिन बहुत असहज करनेवाली तीखे कविताओं के साथ इस दुनिया में दस्तक देते हैं। उनकी आहट से हिन्दी की युवा कविता का ग्लोब पहले कुछ थरथराता है। फिर सामान्य हो जाता है। अनुज लुगुन की कविता के बारे में प्रसिद्ध साहित्यकार महादेव टोप्पो कहते हैं – "उनकी कविताओं में आदिवासियों मुद्दों को, आदिवासी जीवन की विडंबनाओं और त्रासदियों और दुःख तकलीफों से हिन्दी पाठकों को सशक्त ढंग से परिचित कराया है। उनके कारण युवा हिन्दी पाठकों की रुचि आदिवासी साहित्य में बढ़ी है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुज लुगुन का भविष्य साहित्य क्षेत्र में बहुत ही उज्ज्वल है।

'गुरिल्ले का आत्मकथन' अनुज लुगुन द्वारा लिखित एक ऐसी कविता है जिसमें आदिवासी इतिहास झाँकता है। आदिवासी समाज तथा जनजातियाँ, वन संपदा पर निर्भर हैं अर्थात् वनों से मिलनेवाले कंदमूल फल, गोंद, जड़ी-बूटियाँ, लकडियों पर उनका अधिकार है। यहाँ पशु-पक्षी, जीव-जन्तु उनके सहचर हैं। जादू टोने से यह अपने रोगों का निदान करते हैं। उनके हर अनुष्ठान में (धार्मिक तथा सामाजिक) महुआ (एक प्रकार का पेड़) से निर्मित शराब का अपना विशेष महत्व है। ये पहाड़ों में निवास करते हैं तथा भारत के आदिम निवासी माने जाते हैं। गीत, कथा, नृत्य आदि के माध्यम से उन्होंने अपनी सांस्कृतिक परम्परा को जीवित रखा है। उनकी अपनी स्वतंत्र संस्कृति, रीति-रिवाज़, खान-पान, रहन-सहन, आराध्य पूजा पाठ है। ऐसे निरीह, भोलेभाले तथा अपनी संस्कृति, समस्याएँ तथा उनकी स्थिति को प्रकट करती है अनुज लुगुन की कविता 'गुरिल्ले का आत्मकथन'।

वर्तमान युग भौतिक सुखों के पीछे दौड़नेवाला तथा उपभोक्तावादी युग है। उन्हें विदेशों का आकर्षण है। ऐसे समय में भी आदिवासी अपने संस्कारों से चिपके हुए हैं। ये लोग आज भी सूर्य, खेती, नदियाँ, कुण्डों की पूजा करते हैं। उनके लिए वृक्ष भी विश्वास तथा श्रद्धा के पात्र हैं। उन्हीं बातों को दर्शाने का प्रयास अनुज लुगुन ने किया है। वर्तमान युग यांत्रिकता की ओर बढ़ रहा है जिसमें रिश्तों-नातों की टूटन महसूस हो रही है। आत्महीन संबंधों का समाज बढ़ रहा है। वर्तमान संस्कृति हाय-हैलों की बनती जा रही है। जिनमें न कोई आत्मीयता और न कोई संबंध या खिंचाव। ये लोग भले ही अभावों में जीवन जीते हो, उनका अन्य लोग शोषण करते हो तो भी ये अपना जीवन पहाड़ और प्रकृति के सानिध्य में बड़े समाधानी रूप से व्यतीत करते हैं। उनमें लोकमंगल की भावना है।

अनुज लुगुन की कविता आदिवासी जीवन पर आधारित है। गाँवों का देश भारत आज अपने मूल्य उत्स से षड्यंत्र के तहत उजाड़ा जा रहा है। जहाँ उसका मूल स्वरूप भाषा-वाणी रहन-सहन खानपान तो बाद में गायब होगा उससे पहले कुछ साधन या डर दिखाकर उनकी अस्मत लूटी जा रही है। वन संरक्षण के नाम पर जंगल के मूल निवासी आदिवासियों के मलिकाना हक समाप्त करने पर तुले हैं। गैर समझौत, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नीति, पेटेंट जैसे कानूनी अधिकार उस भूमण्डलीकरण के युग में आदिवासियों को गुलाम बनाने का कार्य कर रहे हैं। आदिवासियों ने समय-समय पर अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाने के लिए विद्रोह किए। उन्होंने अपने अपने भूभाग में अपने हकों, अधिकारों और अस्तित्व की लड़ाई के लिए विद्रोह किए। अंग्रेजों, साहुकारों, महाजनों, जमीन्दारों और सुदाघोरों के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आंदोलन किए। झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में पहचान का आंदोलन

भी शुरु हुआ था। जिनमें संथाल उल विद्रोह, उलगुलान, बस्तर की लडाई, पूर्वोत्तर का पहचान का आंदोलन जैसे विभिन्न आंदोलन हैं। आज अधिकतर आदिवासी साहित्य के प्रेरणा स्रोत है बिरसा मुंडा, सिद्धो कानू, तिलका मांझी, टंट्या भिल, कालिबाई, झलकारी जैसे तमाम क्रांतिकारी हैं।

अनुज अपनी इस कविता में कहते हैं – "इस कविता के माध्यम से मैंने आदिवासियों के जीवन पर हो रहे आघात व युद्ध को खोज निकाला यानि वे बताना चाहते हैं आदिवासियों का जीवन हमेशा संघर्ष से भरा हुआ रहा है। लैंड माईन्स, बारूदी सुरंग आदि के कारण आदिवासियों को अपनी जान गवानी पड़ी। आज भी उनका जीवन अनेक कष्टों से भरा है। वे इन कष्टों से बाहर निकलना चाहते हैं, अपना अस्तित्व बनाना चाहते हैं। आदिवासियों की जमीन हथियाने का प्रयास विश्व में सब तरफ हो रहा है। आदिवासी अपने ही जल जमीन से दूर हो रहे हैं। सरकार जबर्दस्त उन्हें उनकी ही जमीन से विस्थापित कर रही है। अगर आदिवासी उसका विरोध करते हैं तो उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। जब मीडिया और पत्रकार के सामने अपने पर हो रहे अत्याचार बताते हैं तो वे उनका मजाक उड़ाते हैं। आदिवासी का दर्द कोई समझना ही नहीं चाहता, उनका पूरा का पूरा गाँव उजड़ रहा है। उनके पालतू जानवर घर, मुर्गा, सूअर, बैल उनकी सम्पत्ति है। सब कुछ बर्बाद हो गए, नदी भी अपना रास्ता भूलकर उनके गाँव में चली आई है। कवि कहते हैं कि आदिवासियों के समस्याओं को लेकर अगर मैं राष्ट्राध्यक्ष को भी खत लिखना चाहता हूँ तो कोई सुनने वाला नहीं।" कवि आगे कहते हैं कि – "मुझे अपने जल जमीन जंगल से बहुत प्यार है। सब कुछ खो जाने पर मैं बहुत दुःखी हूँ।

आदिवासियों के जल, जमीन, जंगल खत्म करके कहते हैं कि ये आदिम संस्कृत है हम तो सुधार लाना चाहते हैं।"

कवि आगे कहते हैं कि मैं अपने आदिवासियों परिजनों को कहता हूँ कि अगर जंगल जमीन अपनी नहीं है। अगर जंगल के एक छोर में आग लगे तो दूसरे छोर चले जाना यानि आदिवासी को सरकारी नीति के तहत अपने बूढ़े बच्चों, औरत के साथ भटकना ही पड़ता है।

चिड़ी का पीछे करते हुए चिड़ीमार गाँव तक पहुँचाता है उसी प्रकार सूदघोर, घूसघोर, धरतीघोर, आदिवासी के गाँव पहुँचकर उनकी आज़ादी को खत्म कर देते हैं। आज चिड़ीमार यानि घरतीघोर, सूदघोर आदि भी अपने लाभ के लिए आदिवासियों पर अत्याचार कर रहे हैं। जंगल खत्म होना यानि आदिवासी के साथ-साथ जंगली सम्पदा तथा पशुपक्षी का भी खत्म होना है। आदिवासी प्रकृतिप्रेमी हैं, इस तरह जंगलों को खत्म होते देख वे सदमे में हैं। हर दिन कुछ न कुछ कानून बनाकर उन्हें उनके जल जमीन जंगल से बेदखल करने में लगे रहते हैं। जब आदिवासी उनका विरोध करते हैं तो फर्जी मूटभेड में उन्हें मार दिया जाता है। उन पर हो रहे अत्याचार का सिलसिला जारी ही है, उनकी आवाज़ दबा दी आती है। पड़ोसी गाँव को भी पता नहीं चलने देते कि वहाँ पर क्या हो रहा है। कानूनी अधिकार इन्हें नहीं मिल पाता क्यों कि उनके पास अपनी जमीन का कोई दस्तावेज नहीं होता।

अनुज लुगुन अपनी जल-जमीन से कितने गहरे जुड़ा है, यह उनके सरोकारों से पता चलता है। उसके घोषित उद्देश्यों के बरक्स उसके और उसके अपनों के जीवन में आ रहे बदलावों को वह कितनी शिद्धत से दर्ज करते हैं। वे कहते भी हैं जब जंगलों में, गाँवों में जहाँ

अभ्रक-बाक्साउट के लिए, अकूत प्राकृतिक सम्पदा के लिए जो बाज़ार सजाये जाते हैं। उसके तार दूर देशों तक फैले होते हैं। लेकिन इन बाज़ारों में जीवन की बेहद जरूरी चीज़े नहीं मिलती बल्कि हमारी जरूरतों को पूरा करने वाले संसाधनों को बेचने-रखने के लिए सैनिक अड्डे जरूर मिलते हैं। नदियों पर बाँध अभ्र-कम्बाइन-बाक्साउट और पहाड़ों को काटते उखाड़ते लोह के दैत्य, आदि को वह कवि फूल की तरह खिलते देखता है और उसी फूल को बेचने के लिए सैनिक स्कूल खुल गए हैं। यह स्कूल आदिवासी बच्चों को बारहखड़ी नहीं गुरिल्ला युद्ध सीखाता है। यानि अपने अस्तित्व को बचाने के लिए उसे गुरिल्ला युद्ध सीखने की ओर ठेल रहे होते हैं। अनुज लुगुन बाज़ार की दुनिया से जोड़े रहे अपने गाँव को उजाड़ते जाते देख रहा है। इतना बड़ा बाज़ार कोई सगा नहीं है। वे अपने दोस्त को खत में गाव की त्रासदी लिखकर चुप नहीं रहते। आगे कहते हैं आदिवासी समाज आदिम उत्पादन संबंधों से उठाकर सबसे आधुनिकतम उत्पादन संबंधों की दुनिया में फेंक दिया जाता है। कितने लोग वहाँ मारे जाते हैं। इस लूटखोर तंत्र के चलते उजाड़े गए ससन दिरी ही उनका असली दस्तावेज है। ससन दिरी यानि कब्र पर गाडा जानेवाला पत्थर। ससन दिरी ही मुंड़ाओं की संस्कृति विरासत वाला पत्थर है। वे लोग अपने पुरखों की स्मृति में उनके सम्मान में उनके कब्र पर गाड़ते हैं, यही पत्थर मुँडाओं के गाँव का मालिकाना चिन्ह है। कहा जाता है कि अंग्रेज़ी समय में जब मुँड़ाओं से उनके गाँव का मालिकाना पट्टा (दस्तावेज) माँगा गया था तो वे उसी पत्थर को ढ़ोकर कलकत्ता की अदालत तक पहुँच गए थे।

आज आदिवासी जनजाति किस प्रकार के सामाजिक राजनीतिक या आर्थिक पक्षपात के शिकार हो रहे हैं। इस कविता के माध्यम से अनुज लुगुन ने समझाया दिया है कि वे अपने जल जंगल जमीन से बेदखल महानगरों में शोषित तथा उपेक्षित हैं। बाज़ार और सत्ता के गठजोड़ ने

आदिवासियों के सामने अस्तित्व की चुनौती खड़ी कर दी है । जो लोग आदिवासी इलाकों में बच गए, वे सरकार और उग्र वामपंथ की दोहरी हिंसा में फँसे हैं । अन्यत्र बसे आदिवासियों की स्थिति बिना जड़ के पेड़ जैसी हो गई है । आदिवासी अपनी भाषा और संस्कृति तथा उससे निर्मित होनेवाली पहचान ही कहीं खोता जा रहा है । आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का उतना गहरा संकट उससे पहले कभी पैदा नहीं हुआ । जब सवाल अस्तित्व का हो तो उसका प्रतिरोध भी स्वाभाविक है । अनुज लुगुन की कविता 'गुरिल्ले का आत्मकथन' भी उसका प्रतिरोध करती है ।

इस लूटखोर तंत्र के चलते उजाड़े गए आदिवासी जन जिन्हें उत्पादन के उन्नत साधनों पर काम करना नहीं आता, जो पेट की आग बुझाने के लिए शहरों में मरने खपने को अभिशप्त है । उनकी चिन्ता भी कवि को अधिक सताती है । ऐसे संघर्षमय जीवन में भी आदिवासी अपने लोकगीतों के साथ एक स्वच्छंद जीवन बिताने की कोशिश करता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि युवा कवि अनुज लुगुन की कविता 'गुरिल्ले के आत्मकथन' में सहज मनुष्यों को बचा लेने की चाहत नहीं बल्कि हमारी सहजीवि जीवन को उनकी पूरी खुशबू के साथ बचा लेने और जी लेने की चाहत से भरी है ।

अनुज लुगुन ने स्वयं पूरे आत्मविश्वास के साथ इस कविता के संदर्भ में कहा कि आदिवासी प्रकृति से भिन्न हैं उन्हें विस्थापित करने तथा औद्योगीकरण करने के नाम पर अमानवीय कोशिश प्रकृति को खारिज करने की कोशिश है । यह आदिवासियों की प्रथम और अंतिम उद्घोषणा है । जंगल उनके अभयारण्य है, उनसे अलग करके प्रकृति को भी बचा पाना संभव नहीं है । यह बात समूची मानव जाति को समक्ष लेनी चाहिए । हम सहजीविता के पक्षधर है । यह पक्षधरता वाचिक नहीं वरन आत्मिक है । हमारी सहजीविता में पेड़, पहाड़,

नदिया, जंगल, पशु-पक्षी सब शामिल है। आगे कहा कि यह जानना दिलचस्प है कि सामने मृत्यु खड़ी होने पर भी आदिवासी अपने अपने गीतों का साथ नहीं छोड़ते। यानि अनुज की कविता आदिवासियों के विस्थापन और पुनर्वास पर वैचारिक हमला है। विस्थापना और पुनर्वास के साथ उनके जल जंगल जमीन छीनने का दर्द और उन पर हो रहे अत्याचार का चित्रण के साथ विरोध भी व्यक्त हुआ।

एक अंक के प्रश्न :

1. अनुज लुगुन किस प्रकार के साहित्यकार हैं ?

उत्तर: आदिवासी साहित्यकार हैं।

2. अनुज लुगुन की किस कविता को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला ?

उत्तर: 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' कविता को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला।

3. 'गुरिल्ले का आत्मकथन' किसके द्वारा लिखित कविता है ?

उत्तर: युवा कवि अनुज लुगुन की कविता है।

4. कवि किस कविता की खोज में हैं ?

उत्तर: कवि ऐसे कविता की खोज में हैं जो ढूँढ निकाले युद्ध के मैदान में लैंड-माइन्स और बारुदी सुरंण।

5. मीडिया पत्रकार बन्धु कवि से क्या कहते हैं ?

उत्तर: यह तुम्हारी मूर्खता है।

6. नदी अपना रास्ता बदलकर कहा घुस गई है ?

उत्तर: गाँव में घुस गई है।

7. कवि अपने स्वजनों को खोजते हुए भटकते हैं तो इससे किसे ज्यादा विज्ञापन मिलते हैं ?

उत्तर: अखबार वालों को अधिक विज्ञापन मिलते हैं।

8. कवि आदिवासी की दुःखद परिस्थिति पर राष्ट्राध्यक्ष को पत्र क्यों नहीं लिखना चाहते हैं

उत्तर: क्योंकि वे लोग इसे चुटकुला की तरह हँसी मज़ाक में लेगे ।

9. कवि किस सदमें में हैं ?

उत्तर: अपनी जल जमीन, जंगल, पशु-पक्षी, के खो जाने से सदमें में हैं ।

10. प्रस्तुत कविता में आदिमता की काली दुनिया किसे कहा गया है ?

उत्तर: आदिवासियों के जीवन को कहा गया है ।

11. किसे काला दैत्य जानकर आदिवासियों के पुरखे डर दुबक जाते थे ?

उत्तर: मालगाड़ी को देखकर वे डरकर दुबक जाते थे ।

12. कवि प्रस्तुत कविता में किसे बेमानी और अनावश्यक चीज़ मानते हैं ?

उत्तर: पक्षधरता और प्रतिरोध को बेमानी और अनावश्यक चीज़ मानते हैं ।

13. सबसे ज्यादा मानव मन कब काँपता है ?

उत्तर: हत्याओं से सबसे ज्यादा मानव मन काँपता है ।

14. कौन फर्जी मुठभेड में मारे जा रहे हैं ?

उत्तर: आदिवासियों का पूरा परिवार फर्जी मुठभेड में मारा जा रहा है ।

15. अत्याचार सहते हुए आदिवासी का जीवन कैसा हो गया है ?

उत्तर: आदिवासी की पहचान द्वीप में भटके-अटके नाविक की तरह हो गयी है ।

16. ससन दिरी किसे कहा जाता है ?

उत्तर: आदिवासियों का एक सांस्कृतिक पत्थर जो हरेक मृत सदस्यों के नाम पर गाड़ा जाता है

17. कवि ने सहजीवी किसे कहा है ?

उत्तर: जुगनू, तितली, फूल, पेड़, नदी, जंगल और पशु-पक्षी आदि को सहजीवी कहा है ।

18. 'गुरिल्ले का आत्मकथन' के माध्यम से कवि ने किस दर्द को उजागर किया है ?

उत्तर: आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार और उनके विस्थापना के दर्द को उजागर किया है

संदर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न :

1) मैं एक कविता की

खोज में हूँ
जो ढूँढ निकाले
युद्ध के मैदान में
लैंड, माइन्स बारुदी सुरंग

2) क्या युद्ध
हवाई जहाज़ों, युद्ध पोतों, टैंकों
और अन्ततः दो राष्ट्राध्यक्षों के बीच
उनके हस्ताक्षर से लड़ा जाता है...?

3) मैं अपनी बात मीड़िया
और पत्रकार बन्धुओं से कहता हूँ
बे हसते हैं कि "यह मेरी मूर्खता है।

4) लेकिन मैं अपने स्वजनों को
खोजते हुए भटकता हूँ और अखबार वालों को
पहले से कई गुना ज्यादा विज्ञापन मिलने लगते हैं।

5) मैं किसी राष्ट्राध्यक्ष को पत्र नहीं लिखूँगा
वह मेरा दोस्त नहीं है और न ही
वह मेरी प्रेम कहानी के बारे में कुछ जानता है
यह उसके लिए भी एक चुटकुला ही होगा।

6) जबकि हम उनके साथ ही
बेहतर दुनिया बसाना चाहते हैं
मेरे ऐसे पत्र पर वह हँसेगा और कहेगा कि
हमारी दुनिया आदिमता की काली दुनिया है।

7) रोज कोई हमे धकेलता है
युद्ध भूमि की तरफ
जो हमें धकेलता है
हम उसी से
लड़ने को तैयार हो जाते हैं।

8) क्या वे जानते हैं कि हम इस वक्त
आसान दुःख और संकट के दौर से गुजर रहे हैं
कि इस गाँव से बेदखल हो जाने के बाद
न उनके लिए और न हमारे लिए रह जाएगा कोई चारगाह ।

9) सजाने, चमकाने और परोसने का तर्क
कैसे मैं लाऊँ कविता में शिल्प, सौष्ठव और सौन्दर्य...?
ओह...! कितना सुन्ह है हमारा गाँव.... हमारा देख...
हमारे साथी, हमारे जंगल, ईचा बाहा और सिम्बुआ बुरू...

10) मुझे गीत गाता देख
उलझन में पड़ जाती है मृत्यु
वह सोचने लगती है कि
मुझे निशाना बनाये या मेरे गीत की

निबंधात्मक प्रश्न :

1. अनुज लुगुन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।
2. 'गुरिल्ले का आत्मकथन' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।
3. 'गुरिल्ले की आत्मकथन' कविता आदिवासी जीवन के दर्द को रेखांकित करती है – स्पष्ट कीजिए ।
4. अनुज लुगुन ने पठित कविता में किस तरह आदिवासी के हक की बात उठाई है । समझाइए ।
5. 'गुरिल्ले का आत्मकथन' कविता का सार लिखकर उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

-प्रस्तुति

डॉ. सुमा टी. रोडनवर

संयोजक, स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन विभाग

विश्वविद्यालय कॉलेज , मंगलूरु

पारिभाषिक शब्दावली

.1Typist- टंकक

.2 Cabinet- मंत्रिमंडल

.3 Principal- प्रधानाचार्य

.4 pro-vice Chancellor- समकुलपति-

.5 Registrar- कुल सचिव

.6 Research Scholar- शोध छात्र

.7 Stipend- वजीफा/वृत्तिका

.8 Journalist- पत्रकार

.9 Reminder- अनुस्मारक

.10 Reciept- आवती

.11 Act- अधिनियम

.12 Bill- विधेयक

.13 Draft- मसौदा

.14 Survey- सर्वेक्षण

.15 Director- निदेशक

.16Time-Tableसारणी-समय -

.17 Candidate- उम्मीदवार

.18 Agenda- कार्यसूची

.19 Clerk- लिपिक

.20 Adviser- सलाहकार

.21 Certificate- प्रमाणपत्र-

.22 Producer- निर्माता

.23 Wireless – बेतार

.24 Salary- वेतन

.25 Account- खाता

****